TITLE CODE : UPHIN50246

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

लोक पहल

शाहजहाँपुर | सोमवार | 14 अगस्त 2023 | शाहजहाँपुर से प्रकाशित | वर्ष :2 | अंक :24 | पृष्ठ :8 | मूल्य 2 रुपये

सरहद पार करने के साथ ही बदल गई देशभक्ति

अंजू ने मनाया 14 अगस्त तो सीमा हैदर ने लहराया तिरंगा

नई दिल्ली एजेंसी। प्यार को सरहदों में बांटा नहीं जा सकता इसकी मिसाल आजकल भारत और पाकिस्तान दोनो जगह देखने को मिल रही है एक ओर जहां पाकिस्तान की सीमा हैदर प्रेम की तलाष में भारत आ गई वहीं भारत की अंजू सरहद पार कर पाकिस्तान पहुंच गई। सीमा हैदर और अंजू... इन दो नामों की चर्चा आजकल हर जगह है। ये बात को दोनों में कॉमन थी ही कि इसी बीच खबर आई है कि अंजू ने पाकिस्तान का स्वतंत्रता दिवस मनाया है। वहीं, सीमा ने भी भारत में हिंदुस्तान का झंडा फहराया और हिंदुस्तान जिंदाबाद का नारा लगाया।

एक न्यूज एजेंसी के मुताबिक, पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत पहुंची अंजू वहां आजादी के जश्न में शामिल हुई. अंजू ने यहां नसरुल्लाह के साथ मिलकर पाकिस्तान की यौम-ए-आजादी (स्वतंत्रता दिवस) का केक भी काटा। बता दें, पाकिस्तान में 14 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है. जबकि, भारत में 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है। अंजू यूं तो कई बार धर्म परिवर्तन कर इस्लाम कबूलने और नसरुल्लाह से निकाह करने की बात को खारिज करती रही है, लेकिन उसने पाकिस्तान की जमकर तारीफ भी की। अंजू ने बातचीत में कहा, 'पाकिस्तान आकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। यहां लोगों का कल्चर बहुत अच्छा है। पाकिस्तान की मेहमाननवाजी काफी अच्छी है। वहीं, बात करें सीमा हैदर की तो उसने भी सचिन के साथ नोएडा के रबूपुरा स्थित अपने घर में तिरंगे जैसी साड़ी, माथे पर जय माता दी लिखी चुनरी पहने तिरंगा फहराया। इस दौरान उसके साथ चारों बच्चे, सचिन, सचिन के पिता नेत्रपाल और वकील एपी सिंह भी मौजूद थे। सीमा और उसके बच्चों ने हिंदुस्तान जिंदाबाद का नारा लगाया। सीमा हैदर ने कहा कि आज मैंने अपने घर पर तिरंगा फहराया है और अब मैं हिंदुस्तान की ही हूं। सीमा हैदर ने इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की जय के भी नारे लगाए।

..क्या मोदी के खिलाफ वाराणसी में उतर सकती हैं प्रियंका गांधी

सांसद संजय राउत ने प्रियंका गांधी को वाराणसी से लोकसभा चुनाव लड़ने की दी सलाह

नई दिल्ली एजेंसी। उद्धव ठाकरे गुट के सांसद संजय राउत ने वाराणसी लोकसभा क्षेत्र से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ कांग्रेस नेत्री प्रियंका गांधी वाड्रा के चुनाव लड़ने की बात कहकर राजनैतिक हलकों में हलचल मचा दी है। संजय राउत ने अपने एक ब्यान में कहा है कि अगर प्रियंका गांधी वाराणसी से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ लड़ती हैं तो उनकी जीत तय है। वाराणसी के लोग प्रियंका गांधी को चाहते हैं। रायबरेली, वाराणसी और अमेठी की लड़ाई बीजेपी के लिए मुश्किल है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधते हुए, शिवसेना (यूबीटी) सांसद संजय राउत ने कहा कि अगर कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी पीएम मोदी के प्रतिनिधित्व वाले निर्वाचन क्षेत्र वाराणसी से आगामी लोकसभा चुनाव लड़ती हैं, तो चौंकाने वाले परिणाम हो सकते हैं संजय राउत ने कहा, भारत में राजनीतिक स्थिति तेजी से बदल रही है और कांग्रेस को लोगों का समर्थन मिल रहा है। अगर कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी वाराणसी लोकसभा क्षेत्र से लड़ती हैं, तो पीएम मोदी के लिए चुनाव जीतना मुश्किल हो जाएगा और प्रियंका उन पर भारी पड़ सकती हैं।

राउत ने 2014 के विधानसभा चुनाव से पहले गठबंधन तोड़ने के लिए शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे को दोषी ठहराने के लिए भी पीएम मोदी की आलोचना की। उन्होंने कहा, 'पीएम मोदी ने महाराष्ट्र के सांसदों की एक बैठक में कहा कि ठाकरे ने 2014 में गठबंधन तोड़ दिया था। वह झूठ बोल रहे हैं क्योंकि महाराष्ट्र में सभी जानते हैं कि तत्कालीन बीजेपी नेता एकनाथ खडसे ने ठाकरे को फोन किया था और उन्हें गठबंधन तोड़ने के बीजेपी के फैसले की जानकारी दी थी। कुछ दिन पहले पीएम मोदी ने अपने एक बयान में कहा था कि गठबंधन बीजेपी ने नहीं बल्कि उद्धव ठाकरे ने तोड़ा था। पीएम मोदी के इस बयान पर कई नेताओं की प्रतिक्रिया सामने आई थी।

समस्त देशवासियों, सुधी पाठको, विज्ञापनदाताओं व सभी सहयोगियों को 'लोक पहल' परिवार की ओर से स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक मंगलकामनाएँ

मजहबी-नफरती मानसिकता ने किया देश का बंटवारा : योगी

विभाजन विभीषिका दिवस पर योगी ने दी शहीदों को श्रद्धांजलि

लोक पहल

लखनऊ। देश के विभाजन की तारीख 14 अगस्त पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कभी न भूलने वाली तिथि बताया है। उन्होंने इस दिन को विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस के तौर पर बताते हुए कहा कि आज ही के दिन मजहबी और नफरती मानसिकता ने भारत का विभाजन किया था। उन्होंने विभाजन के दौरान जान गंवाने वाले लोगों को श्रद्धांजलि दी और कहा कि इस यातना के साक्षी भारतीय नागरिकों के प्रति मेरी संवेदनाएं हैं। योगी ने ट्वीट करके ये बातें कहीं।

उन्होंने भारत के विभाजन की एक तस्वीर शेयर करते हुए ट्वीट किया, 'देश के इतिहास में 14 अगस्त की तिथि कभी न भूलने वाली तिथि है। आज ही के दिन मजहबी और नफरती मानसिकता ने भारत का दु:खद विभाजन किया, जिसके दुष्परिणामस्वरूप असंख्य देश वासियों ने यातनाएं झेलीं और अपनी जान गंवाई।' उन्होंने आगे लिखा कि विभाजन विभीषिका स्मृति दिवसश् के अवसर पर बलिदान हुए सभी नागरिकों को विनम्र श्रद्धांजलि ! इस क्रूर-वीभत्स यातना के साक्षी सभी नागरिकों के प्रति मेरी संवेदनाएं हैं।

बता दें कि देश के विभाजन को लेकर युवाओं को जागरूक करने के लिए योगी सरकार ने पिछले साल 14 अगस्त को विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस मनाया था। इस साल भी प्रदेश के हर जिले में इस अवसर पर आयोजन किए जा रहे हैं। इस साल भी पीएम मोदी ने 14 अगस्त को ट्वीट कर कहा कि विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस उन भारतवासियों को श्रद्धापूर्वक याद करने का अवसर है, जिनका जीवन देश के बंटवारे की बलि चढ़ गया। यह दिन उन लोगों के कष्ट और संघर्ष की भी याद दिलाता है, जिन्हें विस्थापन का दंश झेलने को मजबूर होना पड़ा। ऐसे सभी लोगों को मेरा शत-शत नमन।

समस्त देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक मंगलकामनाएँ

स्वतंत्रता दिवस हमारे लिए भारतीय संस्कृति, संविधान और एकता का प्रतीक है। यह दिन हमें स्वतंत्रता के महत्व को समझने का और अपने देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझने का अवसर देता है। इस दिन हमें देश के समृद्धि, समर्थता और समाज के सामर्थ्य के प्रति सकारात्मक सोचने का मौका मिलता है। आइए हम इस अवसर पर देश के विकास में अपना योगदान देने का संकल्प लें और एक सशक्त, समृद्ध, और समरस्थ भारत के सपनों को साकार करें। स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर करने वाले वीर शहीदों की स्मृति में, हम उन्हें श्रद्धांजलि देते हैं और उनके बलिदान को शत-शत नमन करते है।

स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती
पूर्व केन्द्रीय गृहराज्यमंत्री
मुख्य अधिष्ठाता मुमुक्षु आश्रम,
शाहजहांपुर

स्वतंत्रता आन्दोलन हो या सरहदों की रक्षा शाहजहांपुर के रणबांकुरों ने किया गौरवान्वित

सुयश सिन्हा

शाहजहांपुर। एक ओर जहाँ भारत माता को अंग्रेजों की गुलामी की बेड़ियों से मुक्त कराने के शहीदों की धरा के रणबांकुरों ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिए वही दूसरी ओर आजाद भारत की रक्षा के लिए भी जब जरुरत हुई तो शाहजहांपुर के वीरों ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर देश की रक्षा की।

भारत माता को गुलामी की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में मौलवी अहमद उल्ला शाह शहीद हुए। अहमद उल्ला शाह स्वाधीनता संग्राम की पहली लड़ाई का एक ऐसा शेर हुआ है, जिसके साहस से अंग्रेजी हुकूमत थर्राती थी। अंग्रेजों के खौफ का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि 15 जून 1858 को क्रांतिकारी मौलवी अहमद उल्ला शाह की पुवायां के पास जब शहादत हुई तो उनका सिर धड़ से अलग कर दिया गया और उसे कोतवाली गेट पर लटका दिया गया। ताकि कोई बगावत की हिम्मत न जुटा सके। लेकिन क्रांति की धारा इतनी तेज थी कि कुछ नौजवान कोतवाली से उनका सिर उठा ले गए, जिसे लोधीपुर में दफ्न कर दिया गया। स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में काकोरी काण्ड ने अंग्रेजी हुकूमत को हिला कर रख दिया था।1927 में इस काण्ड के तीन प्रमुख वीर सपूत राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खा और रोशन सिंह फांसी के फंदे पर झूल गए। इसके बाद भी शहीदों की नगरी कहे जाने वाले शाहजहांपुर जिले के वीर सपूतों की शहादत का यह सिलसिला नहीं थमा। 1942- 45 के द्वितीय विश्व युद्ध लाखन सिंह, कुबेर सिंह ने शहादत से देश का गौरव बढ़ाया। भारत-पाक युद्ध 1948 में महावीर चक्र विजेता नायक जदुनाथ सिह की शहादत को भला कौन भुला सकता है। इस जावांज योद्धा ने दुश्मन सेनाओं को मुंहतोड़ जवाब देते हुए अपने शौर्य से जनपद को गौरवान्वित किया है। कलान के खजुरी गांव के लाल जदुनाथ सिंह की वीरता के चलते ही उन्हें मरणोपरांत परमवीर चक्र से नवाजा गया था। नायक जदुनाथ सिंह ने पाकिस्तान के साथ हुए युद्ध में जिस शौर्य का प्रदर्षन किया वह अद्वितीय था। 6 फरवरी 1948 को कश्मीर के नौसेरा के पास युद्ध के दौरान वह वीरगति को प्राप्त हुए। पुवायां क्षेत्र के गांव महोवा निवासी मेजर सरदार सिंह 1947-48 की लड़ाई में वीरगति को प्राप्त हुए थे उन्हें वीर चक्र से नवाजा गया था। इसी तरह महेंद्र सिंह, नरवीर सिंह, भारत-चीन सीमा विवाद 1962 के युद्ध में कुतुबुद्दीन खा, एनसीई नन्हे लाल, बलवीर सिंह, पहलवान सिंह, राजेंद्र सिंहि, मुरारी सिंह, छोटे सिंह, कैप्टन कन्हैया लाल। भारत-पाक युद्ध 1965 में रामपाल सिंह, लास नायक प्रीतपाल, मलूक सिंह, सिंह सवार कमल किशोर, चिरौजी लाल, राजाराम गुप्ता, भारत-पाक युद्ध 1971 में सब ले. शिश प्रकाश, विद्याराम, नायक अनोखे सिंह, रामहरी सिह, लास नायक दृगपाल सिंह शहीद हुए। ब्लू स्टार 1984 में सतपाल सिंह, पवन ऑपरेशन श्रीलंका 1987 में मूलचंद्र वाल्मीकि, सुरेश कुमार शर्मा तथा कारगिल युद्ध 1999 में काबिलपुर के रमेश चंद्र ने बलिदान देकर वीर नगरी का गौरव बढ़ाया। ओपी रक्षक में नायब सुबेदार सुनील कुमार तथा लास नायक देवेंद्र सिंह ने शहादत से शहीदों की धरा को गौरवान्वित किया। 34 शहीद सपूतों समेत 14 सैनिकों के शौर्य पराक्रम को सेना ने भी सलाम किया और उन्हें सेना ने सर्वोच्च सम्मान परवीर चक्र, महावीर चक्र तथा वीर चक्र से उन्हें सम्मानित किया गया।

शहीद उद्यान पार्क एवं गांधी भवन में मंत्री सुरेश खन्ना ने किया शिलाफलकम का अनावरण

हाथ में दिया लेकर पंच प्रण की ग्रहण की शपथ

लोक पहल

शाहजहांपुर। वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री सुरेश कुमार खन्ना ने शहीद उद्यान पार्क एवं गांधी भवन में शिलाफलकम का अनावरण कर हाथ में दिया लेकर पंच प्रण की शपथ ग्रहण की, मंत्री के साथ जिला अधिकारी उमेश प्रताप सिंह, नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा, मुख्य विकास अधिकारी एस.बी. सिंह, अपर जिलाधिकारी प्रशासन संजय कुमार पाण्डेय, नगर मजिस्ट्रेट डा. वेद प्रकाश मिश्रा सहित मौजूद गणमान्य व्यक्तियों ने भी पंच प्रण की शपथ ग्रहण की। इस अवसर पर मंत्री सुरेश कुमार खन्ना ने शहीदों के बलिदानों को याद किया, उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने बहुत ही यातनाएं सही है व बहुत बड़े-बड़े बलिदान दिए हैं, उन्होंने कहा कि उनका केवल एक ही लक्ष्य था कि आने

वाली पीढ़ी को एक स्वतंत्र वातावरण में जीने का अवसर मिल सके, जिसके लिए उन्होंने अपने प्राणों की आहुति तक दी है। इस अवसर पर तमाम गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

धर्म और जाति के नाम पर बरगला कर जनता से वोट लेती है भाजपा: धर्मेंद्र यादव

लोक पहल

शाहजहांपुर। समाजवादी पार्टी के नेता व पूर्व सांसद धर्मेंद्र यादव ने कहा कि वीरांगना फूलन देवी ने जो अत्याचार, शोषण अन्याय सहा है उस दिशा में देश में आज भी कोई बदलाव नजर नहीं आ रहा है। मणिपुर से महिलाओं को लेकर दिल दहला देने वाली तस्वीर सामने आ रही है। लेकिन केंद्र में जो सरकार सत्ता रुढ़ है वह महिलाओं के अत्याचार अन्याय और शोषण पर चुप्पी साधे है आने वाले लोकसभा चुनाव में ऐसी महिला विरोधी, किसान विरोधी, नौजवान विरोधी, अल्पसंख्यक और शोषित वंचित व कमजोर लोगों की विरोधी सरकार को धूल चटाने के लिए समाजवादी पार्टी के प्रत्याषी को भारी बहुमत से विजयी बनाए।

पूर्व सांसद धर्मेंद्र यादव खिरनी बाग रामलीला मैदान पर आयोजित वीरांगना फूलन देवी जयंती समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। धर्मेंद्र यादव ने कहा कि असहनीय अत्याचार अन्याय और शोषण झेलने के बाद फूलन देवी ने जिस तरह साहस का परिचय दिया अन्याय करने वालों का डटकर

मुकाबला किया। ऐसी मिसाल दुनिया में कहीं नहीं मिलती है। उन्होंने कहा कि फूलन देवी की धोखे से जघन्य हत्या करने वाली सोच आज भारतीय जनता पार्टी की सरकार में है। उन्होंने कहा कि यह इतने शातिर हैं धर्म और मजहब के नाम पर फिर जनता को बरगलाने का काम करेंगे। सपा नेता ने कहा कि शाहजहांपुर के क्रांतिकारी धरती से वह 224 के चुनाव का आगाज कर दिया है।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से सपा जिलाध्यक्ष तनवीर खां, पूर्व विधायक राजेश यादव, पूर्व विधायक रोशनलाल वर्मा, पूर्व विधायक नीरज मौर्य कुशवाहा, पूर्व एमएलसी कुंवर जयेश प्रसाद, पूर्व एमएलसी अमित यादव, सपा के निवर्तमान जिला महासचिव रणंजय सिंह यादव, उपेंद्र पाल सिंह, चौधरी रामकुमार भोजवाल, सैयद रिजवान अहमद, स्नेहा गुप्ता, गायत्री वर्मा, अतीउल्ला सिद्दीकी, सूरजपाल यादव, संदीप यादव, विपिन दीक्षित, प्रदीप तिवारी, विकास चंद्र एडवोकेट, शिव प्रताप यादव, परवेज अंसारी, मुनेंद्र पाल सिंह, पिंटू यादव, डॉ. नवनीत यादव, राम लाल वर्मा, ज्योति कश्यप आदि ने विचार व्यक्त किये।

मंत्री सुरेश खन्ना ने किया पुलिस लाइन में शिलाफलकम का लोकार्पण

शाहजहांपुर। आजादी के अमृत महोत्सव की समापन श्रृंखला में पुलिस लाइन में 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान के अन्तर्गत पंच प्रण शपथ ग्रहण के साथ शिलाफलकम का लोकार्पण मुख्य अतिथि वित्त एवं संसदीय कार्यमंत्री सुरेश कुमार खन्ना ने किया। इस मौके पर मंत्री श्री खन्ना, सांसद अरूण सागर, महापौर अर्चना वर्मा ने पुलिस लाइन परिसर में पौधारोपण भी किया। इस मौके पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार मीणा, एसपी सिटी सुधीर जायसवाल, एडीएम प्रशासन संजय पांडे, नगर मजिस्ट्रेट डा. वेद प्रकाश मिश्रा, सीओ सिटी वीएस वीर कुमार, सीओ सदर अमित चौरसिया सहित तमाम पुलिस के अधिकारी व अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

प्राथमिक विद्यालय तेरा में मनाया गया आजादी का अमृत महोत्सव

लोक पहल

शाहजहांपुर। सिंधौली क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय तेरा में आजादी का अमृत महोत्सव मनाया गया। विद्यालय के बच्चों के मध्य कविता गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्राइमरी स्कूल तेरा में छात्रों ने कविता का गायन किया गया, जिसमें छात्रों ने हाव-भाव के साथ प्रस्तुतिकरण किया। सर्वश्रेष्ठ गायन करने वाले छात्रों को 15 अगस्त को पुरस्कार देकर सम्मानित किया जायेगा। इसके बाद छात्रों को भोजन भी परोसा गया।

सहायक अध्यापक दीपा पूनिया के संचालन में प्रधानाध्यापक सरताज अली, सारिका गुप्ता, राम नरायन, छात्र चांदनी, आरफा, आसना, अलतविस, शिजा, उरूज, जीनस, निकहत, हिबा, उम्मुल खैर, मिनटस, जोया, दिव्या, आलोक, आफ्ताब, राज, अयान, राजबी, मोहम्मद सैफआदि मौजूद रहे।

जयंती पर याद किए गए डॉ विक्रम साराभाई

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय के भौतिक विज्ञान विभाग के द्वारा महान भौतिकविज्ञानी डॉ विक्रम साराभाई के जन्मदिन पर उन्हें स्मरण करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। इस अवसर पर कार्यक्रम के संयोजक एवं विभागाध्यक्ष डॉ शिशिर शुक्ला ने कहा कि डॉ विक्रम साराभाई को भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का जनक कहा जाता है। आज हम चंद्रयान-3 मिशन की सफलता को लेकर पूर्ण आशान्वित हैं। अंतरिक्ष की ओर भारत के कदम लगातार तीव्र गति से बढ़ रहे हैं। अंतरिक्ष कार्यक्रमों को लेकर विश्वपटल पर भारत की छवि निर्मित होने की आधारशिला डॉ विक्रम साराभाई ने ही अपने परिश्रम व समर्पण से तैयार की थी। इस मौके पर डॉ सत्येंद्र कुमार सिंह, राजनंदन सिंह राजपूत, हर्ष पाराशरी, अमित कुमार, डॉ संदीप दीक्षित, चंदन गिरि गोस्वामी, प्रशांत शर्मा, सुधाकर गुप्ता, देवेंद्र कुमार आदि उपस्थित रहे।

'मेरा माटी मेरा देश' कार्यक्रम में किया गया शहीदों को नमन

लोक पहल

शाहजहांपुर। आजादी के अमृत महोत्सव'' के तहत देश भक्तों एवं वीर बलिदानियों को नमन करने और उनकी स्मृतियों को हृदय में सजोने के लिए 'मेरी माटी मेरा देश' कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। नेहरू युवा केन्द्र के तत्वावधान में विकासखण्ड बंडा में उच्चर माध्यमिक विद्यालय में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद मिथिलेश कुमार ने किया। इस मौके पर सांसद मिथिलेष कुमार ने कहा कि आज हम उन पंचतत्व को नमन करेंगे जिसमे हम पले बढे है। वो है हमारे देश की माटी। इस पूरे अभियान का शीर्षक है ''मेरी माटी मेरा देश'' माटी को नमन, वीरों का वंदन है। हमारे देश में अगस्त 1947 को ही सम्पूर्ण क्रान्ति का आगाज हुआ था, जिसे अगस्त क्रान्ति के नाम से भी जाना जाता है जिसके कारण अग्रेजो को विवश होकर भारत को छोड़ना पड़ा था। इस मौके पर स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के परिवारजन एवं देश के लिये शहीद होने वाले अमर बलिदानियों के परिवार के सदस्यों सहित 26/11 मुंबई आतंकी हमले के नायक कमांडो अनिल सिंह चौहान, बाबूराम वर्मा, रमेश दीक्षित, सुधीर मिश्रा, देवेश, शुक्ला, मनोज शुक्ला, देवेंद्र प्रकाश अवस्थी, सुनील अवस्थी, विमल किशोर मिश्र, गिरिजा शंकर मिश्र, पशुपतिनाथ मिश्र को सम्मानित किया गया।

इस मौके पर जिला युवा अधिकारी मयंक भदौरिया, गंगा समिति सदस्य विनय सक्सेना, मुनीष सिंह परिहार, अरविंद मिश्रा, आशीष मिश्रा, पंकज वर्मा, निर्दोष शर्मा, आर एल मौर्या आदि मौजूद रहे।

स्वाधीनता की लड़ाई में ऐतिहासिक है शाहजहांपुर की भूमिका

शाहजहांपुर। स्वाधीनता की लड़ाई में जिला शाहजहांपुर का योगदान एतिहासिक रहा है। दो ऐसे कालखंड आए जब जिले के निवासियों ने राष्ट्रीय स्तर पर आजादी की लड़ाई का नेतृत्व किया। प्रथम सन 1857 में जब पूरे देश में अंग्रेजो ने क्रांति को दबा दिया था, मुगल बादशाह के भतीजे,उनके जनरल बख्त खान,मौलवी अहमदुल्लाह शाह,नाना साहिब शाहजहांपुर से ब्रिटिश हुकूमत से लोहा लेते रहेदूसरा अवसर तब आया जब गांधी जी ने एक वर्ष में आजादी प्राप्त करने का वचन देकर भी 1922 में असहयोग आंदोलन वापस ले लिया। जिसके बाद शहर के युवा पंडित राम प्रसाद बिस्मिल,ठाकुर रोशन सिंह और अशफाक उल्लाह खान के नेतृत्व में राष्ट्रीय स्तर की क्रांति की उठी दूसरी धारा का नेतृत्व करने के लिए उठ खड़े हुए। शचींद्र सान्याल के साथ मिलकर बिस्मिल ने हिंदुस्तान प्रजातांत्रिक एसोसिएशन बना ली और इसी के बैनर तले बहुचर्चित काकोरी ट्रेन एक्शन को अंजाम दिया। जनपद के तीनो युवाओं की शहादत के बाद उक्त एसोसियेशन का नेतृत्व शहीद भगत सिंह ने संभाल लिया और सांडर्स की हत्या सहित केंद्रीय असेंबली में बम फेंके। यही नहीं अपितु कांग्रेस की मुख्य धारा के साथ चले तीनो गांधीवादी आंदोलनों असहयोग,सविनय अवज्ञा तथा भारत छोड़ो आंदोलन में जनपद के नागरिकों की भूमिका रही। 193० के सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान शहर से सटे अजीजगंग में नमक कानून तोड़ने के लिए विशेष प्रयास किए गए। महिलाए भी इस आंदोलन में बढ़ चढ़ कर प्रतिभाग कर रही थी,इस आंदोलन में अस्सी से ज्यादा लोगो को सजा मिली। 1942 में जब भारत छोड़ो आंदोलन प्रारंभ हुआ तब शहर कांग्रेस में पंडित शिव कुमार मिश्रा, पुरूषोत्तम दास टंडन,लाखन दास नेता थे किंतु उनकी गिरिफ्तारी के बाद आंदोलन भूमिगत हो गया और इसकी कमान मनी लाल खन्ना उनके भाई बसंत लाल खन्ना,मुन्नालाल गुप्ता,उमा देवी, मुक्ता प्रसाद,गार्गी दीन,विशंभर दयाल अवस्थी,जानकी प्रसाद ने संभाल ली। तिलहर,रोजा,कहिलिया में रेल की पटरियां उखाड़ दी गई और सिग्नल तोड़ दिए गए। बहादुरगंज में युवाओं,स्कूली छात्रों से पुलिस की मुठभेड़ हुई। बड़ागांव, तिलहर, पुवायां भी बेहद अशांत थे।

सुभाष चंद्र बोस भी आए थे शाहजहांपुर: आजाद हिंद फौज के सेनानायक और नेताजी के नाम से मशहूर सुभाष चंद्र बोस भी फारवर्ड ब्लाक की स्थापना करने के बाद दो बार 22 जनवरी 194० तथा 5 मार्च 194० शाहजहांपुर आए थे। उनकी सभा टाउन हाल में हुई थी जहां शहरवासियों ने उन्हें एक हजार रुपया चंदे के रूप में दिया था, जो बाद में आजाद हिंद फौज के काम आया। उन्होंने यहां कहा 'इस दान का एक एक पैसा राष्ट्र निर्माण में लगेगा' यही नहीं अपितु नेताजी की इंडियन आर्मी में शहर से अनेक युवाओं ने भागीदारी की थी इनमे स्टेशन के पास रहने वाले जेएस बेदी,सिंधौली के रामकुमार और कांट औदापुर के रहीमुल्लाह प्रमुख हैं। शाहजहांपुर गजेटियर 1988 के वर्णन से पता चलता है जब कलकत्ता में नेताजी नजरबंद हुए थे तब भी शहर में विरोध प्रदर्शन हुए थे।

चार बार गांधी जी आए थे शहर: राष्ट्रीय स्तर के नेताओ में गांधी जी ने चार बार,अली बंधुओ और जवाहर लाल नेहरू ने दो बार,सहित अनेक नेता शहर के दौरे पर आए। शाहजहांपुर आए। जब 11 नवंबर 1929 को गांधी जी तीसरी बार शहर आए तो उनके साथ कस्तूरबा गांधी और जे बी कृपलानी भी थे। इसी प्रकार पंडित गोबिंद बल्लभ पंत का शहर से अटूट नाता रहा वे सन 1937 में प्रांतीय चुनावों के समय शाहजहांपुर बरेली पीलीभीत बदायूं क्षेत्र से ही चुनकर प्रदेश केंपहले मुख्यमंत्री बनेंथे।

मेरे देश में

मैं कैसे कह दूं
सब ठीक है मेरे देश में,
हुकूमत की नींद नहीं खुलती,
और बेटियां लुट जाती
है मेरे देश में,
दम मोहब्बत का भरना
अब तो बंद ही कर दो ना,
लफ्जों की कशीदाकारी पर,
जाने कितने बेमौत मर जाते
मेरे देश में,
किसी ने साजिश किया
और किसी घर में उदासी है,
कितनो की भूख का दरिया
आज भी प्यासी है मेरे देश में,
लफ्जों की चोर बाजारी है
नियत की सेंधमारी है ,
जाने कैसी यह लाचारी है
राम मेरे देश में,
दिल लगाना गुनाह है क्या
जमीर गवाना सबाब है क्या,
हम तो इससे परे भले रहेंगे
बड़ी दिलदारी है मेरे देश में,
उम्मीद ना कीजिए
आप साबुत बच जाएंगे,
आग फैलने तो दीजिए,
आप भी जद में आएंगे,
गरीबी बीमारी है मेरे देश में,
इनका क्या जाएगा
ये तो भरे पेट हैं,
सोचो उनका जो खिलाकर भी
भूखा रह जाएगा मेरे देश में,

रेखा शाह आरबी

आजादी के सौन्दर्य को,
नमन करते हैं हम-सब,
आज के दिन यहां।
आजादी का जश्न मनाते हैं,
हम लोग मिल-जुलकर यहां।
यह एक सुखद अहसास का,
मानों पल मिला लगता है,
खुशियां और सुकून यहां इस शुभ दिन में,
हर दिल में पलता दिखता है,
यह अंग्रेजी हुकूमत का,
अनन्त अन्त बताता है,
भारतवर्ष की अस्मिता को,
सुरक्षित होने के दिन से,
यह शुभ दिन जाना जाता है ,
लाखों कुर्बानियां आज भी,
हर भारतीय को याद कराती है,
स्वतन्त्रता सेनानियों के लिए,
फूलों से स्मरण करने की,
अपूर्व शक्ति दे जाती है।
यह जीवन की सबसे बड़ी,
खुशियां हर भारतीय को दिलाता है,
हर शख्सियत इस दिन,
देशभक्ति गीत गाकर अपने मन में,
राष्ट्रीयता को जागृत कर,
सबमें खुशियां भरने में,
सबसे पहले खड़ा हो जाता है।
आओ हम-सब मिलकर यहां,
उन्नति और प्रगति पथ पर आगे
बढ़ने की कसम खाएं।
देश की आजादी के पवित्र दिन पर,
देशभक्ति के गीतों से,
भारतवर्ष को सुकून देने में लग जाएं।

डा. अशोक शर्मा, पटना

देशभक्ति की गाथा अभिनन्दन लगती है,
हमको वतन की धूल भी चन्दन लगती है॥
राम, कृष्ण ,गौतम गांधी के पावन स्वर गाती,
ध्रुव प्रहलाद की भक्ति के हमको भजन सुनाती,
तुलसी के मस्तक की रोली- बंदन लगती है।
हमको वतन की धूल भी चन्दन लगती है॥
क्रांतिकारियों ने जग में हिन्द का मान बढाया,
फांसी के फंदे को चूम कर अपना शीश चढाया,
आजादी संग पड़ी भाँवरें बंधन लगती है।
हमको वतन की धूल भी चन्दन लगती है॥
महिलाएँ दहलीज लांघती, नहीं मनाती घर मातम।
बैरी के सम्मुख मिलकर के गा उट्ठी 'वन्दे मातरम'।
शंखनाद का स्वर आजादी क्रन्दन लगती है।
हमको वतन की धूल भी ये चन्दन लगती है॥
तरुणाई सूली पर चढ़ के देख रही थी उत्थान-पतन,
हुंकार बगावत कर बैठी हिल गया ब्रिटिश का सिंहासन,
यहाँ एकता की खुशबू उपवन लगती है।
हमको वतन की धूल भी चन्दन लगती है॥

सरिता बाजपेयी 'साक्षी'

आजादी

सुमन पाठक

आज हम आजादी की 75 वीं वर्षगांठ की आजादी का अमृत महोत्सव मनाते हुए गौरवान्वित हैं और जिन्होंने देश को आजाद कराने में अपने प्राणों का बलिदान कर दिया उनके प्रति कृतज्ञ भी हैं।
आज हमें अपने लोकतांत्रिक देश में अपनी बात कहने की पूरी आजादी है लेकिन क्या हमने सोचा है आजादी का जश्न मनाते मनाते कहाँ तक आ गये किस राह पर चल पड़े हैं हम... गौरवशाली सँस्कृति की राह से भटककर स्वयं का पाश्चात्य करण करके खुद को आजाद मान रहे हैं। क्या उच्चनैतिक मूल्यों को नकार कर जीना ही आजादी है? अपनी संस्कृति, संस्कार, पौराणिक और वैज्ञानिक पद्धति का उपहास करना ही आजादी है? मैं आधुनिकता या वैज्ञानिकता के खिलाफहरगिज नहीं हूँ लेकिन आजादी के नाम पर परम्पराओं, मर्यादाओं ,आदर्शों को भूलकर पाश्चात्य बेतरतीब जीवन शैली का समर्थन भी नहीं करूँगी। मैं नहीं कहती कि पुरानी कुरीतियों को ढोते रहो, लेकिन विश्व की सर्वश्रेष्ठ प्राचीन हिन्दू सभ्यता जो विज्ञान सहित सभी विशिष्टताओं को अपने अन्दर समेटे है उसको नकारकर हमारी युवा पीढ़ी का उच्छृंखल बनना भी हमारे लिए शुभ नहीं होगा आज की पीढ़ी ऐसी आधुनिक जीवन शैली अपनाकर स्वयं को आजाद मान रही है ये हमारे लिए ही घातक है अतरू अपने उच्च जीवन मूल्यों को हृदय में रखकर आधुनिक बनना ही श्रेयस्कर होगा हमारे लिए....
कुल मिलाकर आजादी के अमृत महोत्सव पर इतना ही कहना चाहती हूँ कि हमें स्वंय को अपनी इस अपरिपक्व मानसिकता से आजाद करना होगा। क्योंकि जब हमारी सभ्यता, सँस्कृति बचेगी तभी देश बचेगा।

स्वतंत्रता का गीत

हिंदू हों या के मुस्लिम
वो सिख हों या ईसाई
हैं सब ही भाई भाई
सब को मेरी बधाई
15 अगस्त आई
हर सू बहार छाई।
अपने वतन की खातिर
बच्चों तुम्हें पता है
कितने बहादुरों ने
अपना लहू दिया है
तब शुभ घड़ी ने यह पाई
15 अगस्त आई
हर सू बहार छाई।
हम थे गुलाम पहले
घुट घुट के जी रहे थे
बापू ने हम सभी को
आजादी ये दिलाई
ये धरती जगमगाई
15 अगस्त आई।
खाओ कसम कि अब हम
मिलजुल के ही रहेंगे
दुनिया में नाम ऊँचा
इस देश का करेंगे
है इसमें ही भलाई
15 अगस्त आई
हर सू बहार छाई।

राशिद हुसैन राही (जुगनू)

शहीदों को शत्-शत् नमन

याद रखो कि आजादी यह,
खेल-खेल में नहीं मिली।
शोणित से सींचा वीरों ने,
तभी मुक्ति की फसल खिली।।
हंसते-हंसते दीवानों ने,
उड़ा दिए जीवन पाखी।
मांओं ने निज लाल लुटाए,
बहनों ने अपनी राखी।।
अब कुटिल सियासत का इसमें,
व्यापार नहीं चलने देंगे।
आतंकवाद की लपटों में,
यह देश नहीं जलने देंगे।।
संकल्प करो भारत वालों,
अब द्वेष नहीं रोपेंगे हम।
फिर मानवता के सीने में,
ये छुरा नहीं घोपेंगे हम।।
यद्यपि हैं मजहब यहाँ कई,
हैं पंथ सभी के अलग-अलग।
लेकिन जब देश पुकारेगा,
हम नहीं रहेंगे अलग- थलग।।

इस देश-प्रेम के पौधे को,
जलहीन नहीं होने देंगे।
सोंधी मिट्टी में नफरत के,
हम बीज नहीं बोने देंगे।।
यदि पड़ी जरूरत मातृभूमि को,
अपना लहू चढ़ाएंगे।
ये रुधिर राष्ट्र का है इसको,
अब यूं ही नहीं बहाएंगे।।
भारत माँ के सब बच्चे हैं,
यूं जाति धर्म में मत बाँटो।
अपने ही हाथों से अपनी,
अब शाखाओं को मत छांटो।।
अपनी जातियां सहेजो सब,
पर दूजे का सम्मान करो।
ध्वज अखिल विश्व में फहरा दो,
मत भारत का अपमान करो।।
सब धर्म सिखाते प्रेम दया,
सब ग्रन्थ यही तो कहते हैं।
यह देश सभी का है आँगन,
हम सब मिलजुल कर रहते हैं।।

हम घृणा- द्वेष को जीवन का,
आधार नहीं बनने देंगे।
अपने आँगन में नफरत की,
दीवार नहीं बनने देंगे।।
यह मन्दिर तो हिन्दू का है,
यह मस्जिद मुसलमान की है।
यह मेरी-तेरी बाद में है,
पहले यह हिन्दुस्तान की है।।
अब किसी धरोहर को अपनी,
नीलाम नहीं होने देंगे।
हम सब स्वदेश की माटी को,
शमशान नहीं होने देंगे।।
जो भारत माँ की चूनर पर,
जो दाग लगे धोने होंगे।
शंकाओं की इस धरती पर,
अब समाधान बोने होंगे।।

डा. इंदु अजनबी

बहुत जरूरी है

इस अंधकार को आखिर मिटना ही होगा,
बस दीप जलाते रहना बहुत जरूरी है।
दुख-दर्द बाँट लेते हैं अक्सर आपस में,
हम साथ-साथ खाते पीते रहते आए।
हिन्दू मुस्लिम या सिक्ख पारसी ईसाई,
हम एक-दूसरे से कटकर कब रह पाए।
जो खड़ी हो रही हैं नफरत की दीवारें,
उन दीवारों के ढहना बहुत जरूरी है।
मजहब क्या होता है तुमको बतला देंगे,
तुलसी कबीर नानक गौतम गाँधी जैसे।
कैसे चुकता होता हैं माँ का कर्ज यहाँ,
पूछो सुभाष अशफाक लाहिड़ी रोशन से।
ईसा ने सूली पर चढ़ना स्वीकारा था,
कुछ दर्द तुम्हें भी सहना बहुत जरूरी है।
कवि हूँ शुभचिंतक हूँ धरती के कण-कण के,
है कौन कहाँ पर गलत बताना ही होगा।
संस्कृति की रक्षा का दायित्व हमारा है,
दिग्दर्शक बनकर हमें निभाना ही होगा।
मानवता की पहचान बनाए रखने को,
हर बात समय पर कहना बहुत जरूरी है।

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'

एक साथ मिल गाएं वंदे मातरम

जन-गण-मन हमें गाना चाहिए।
राष्ट्रध्वज हमें फहराना चाहिए।
जिसे देशगान से हो जरा भी गुरेज,
उसे देश छोड़ चला जाना चाहिए।
राष्ट्रगान देश का अमर गान है।
हर देश भक्त की ये पहचान है।
चूम फंदा फांसी का जो हो गया शहीद,
उस अशफाक की ये आन-बान है।
देशगान जीवन का मूल मंत्र है।
इसमें समाया हुआ जनतंत्र है।
इसके बिना तो कुछ भी नहीं यहां,
ये है तभी तो मेरा भारत स्वतंत्र है।
छोड़ के विवाद राष्ट्रगीत गाएं हम।
मंत्र है ये मुल्क का हृदय बसाएं हम।
झूम उठें इसे सुन दसों दिशाएं,
एक साथ मिल गाएं वंदेमातरम।

कुलदीप दीपक

जश्ने आज़ादी

आजादी का जश्न मने हर दिल में है हलचल।
स्वाभिमान के साथ तिरंगा फहरे पल प्रति पल।
केवल इतना ध्यान रहे हर भारतवासी को,
हो न कभी मैला अपनी भारत माँ का आँचल।

विकास सोनी 'ऋतुराज'

बहा जब खून का दरिया नगर आबाद हो पाया।
शहीदों की बदौलत ही ये चेहरा शाद हो पाया।
गुलामी में रहे हैं दो सदी इस मुल्क के वासी,
शहादत से जवानों की वतन आजाद हो पाया।

आतिश मुरादाबाद

पावन से भी पावनतम यह मातृभूमि की माटी है।
भारत माँ पर बलिदानों की ही अनुपम परिपाटी है।
बिस्मिल-रोशन-अशफाक सरीखे झूल गए थे फाँसी पर,
वीर जवानों ने ही भारत माँ की बेड़ी काटी है।

कुलदीप 'दीपक'

याद तुम्हें वीरों का भी बलिदान रहे आजीवन।
ओ भारत के सिंह तुम्हें ये ध्यान रहे आजीवन।
कतरा-कतरा लहू भले ही बह जाए मेरा ,
मगर सलामत अपना हिंदुस्तान रहे आजीवन।

अभिषेक ठाकुर 'अधीर'

मार ली हर चाह मन में सिर्फमाटी के लिए।
बाँट दीं खुशियाँ वतन में सिर्फमाटी के लिए।
मैं करूँ बंदन सतत उन बाँकुरों का शान से,
जो हुए बलिदान रण में सिर्फमाटी के लिए।

पियूष शर्मा

गौरवशाली यह आजादी सबका हो मंगल।
सन सैंतालिस में अगस्त की तिथि पंद्रह उज्जवल।
शामिल इसमें सत्य अहिंसा चरखा खादी भी,
यह आजादी अगणित बलिदानों का है प्रतिफल।

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'

अँधियारे में नया सवेरा लाई आजादी।
तोड़ गुलामी के बंधन मुस्काई आजादी।
भारत माँ के बेटों का वंदन अभिनंदन है,
जिनके बलिदानों से हमने पाई आजादी।

विकास शर्मा 'पारस'

होना भी यही चाहिये जुज़्बे ईमान
हर चीज से बढ़ कर है हमारी पहचान
रहते हैं मिल जुल कर हम सब इशरत,
जय हिंद मेरी जान मेरा हिंदुस्तान

इशरत सगीर

सम्पादकीय

स्वतंत्रता दिवस : आओ लें कुछ संकल्प

देष 77वां स्वतंत्रता दिवस मना रहा है। स्वतंत्रता दिवस को अमृतकाल के रूप में मनाए जाने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है लेकिन स्वतंत्रता दिवस के कार्यक्रमों के चकाचौंध के बीच हम स्वतंत्रता प्राप्ति में अपने प्राणों को न्यौछावर करने वाले बलिदानियों की अमर गाथाओं और स्वतंत्रता के बाद देश को एक सूत्र में पिरोने के लिए गये संकल्पों को भूलते जा रहे है। स्वतंत्रता दिवस मात्र एक पर्व ही नहीं, वरन उन तमाम संघर्षों, कुर्बानियों और स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को याद करने का दिन है जिनके बिना हम यह दिन मना ही नहीं पाते। यह उन संकल्पों को भी दोहराने का दिन है जो हमने आजादी की लड़ाई के दौरान लिए थे। क्या हमें वे संघर्ष, वे सेनानी और वे संकल्प याद हैं? यह सवाल इसलिए महत्वपूर्ण है। युवा पीढ़ी अपने वर्तमान संघर्ष और भविष्य निर्माण में इस कदर मशगूल है कि उसे अपने अतीत और इतिहास का समुचित ज्ञान ही नहीं। आज जिस खुली हवा में हम सांस ले पा रहे हैं उसे हमने केवल अपने हक की तरह देखा है। उसके पीछे के संघर्ष और बलिदान से नावाकिफहम उसके मूल्य और उसे सहेजने के अपने दायित्व को ठीक से समझ नहीं पाए हैं।

आज हम जिस स्वतंत्रता और अधिकार का दावा करते हैं उसका एक सामाजिक और राष्ट्रीय पहलू भी है जिसे हम नजरंदाज कर देते हैं। इससे ही समाज में अनेक संघर्षों का जन्म होता है और उन उद्देश्यों को प्राप्त करने की गति धीमी पड़ती है। हमने संकल्प लिया था कि हम भारत के सभी नागरिकों को 'न्याय, स्वतंत्रता, समानता के साथ-साथ गरिमापूर्ण और भाईचारे से परिपूर्ण जीवन' सुनिश्चित करेंगे। ये ऐसे संकल्प हैं जो सर्वविदित और निर्विवाद हैं। क्या बीते सात दशकों में हमने इन संकल्पों को सिद्ध करने की दिशा में कोई गंभीर प्रयास किया है? हमें यह सवाल स्वयं से ही पूछना है। यह सवाल हम किसी सरकार पर नहीं दाग सकते। ध्यान रहे सरकारें देश नहीं होतीं। जनता देश होती है। जनता सरकार होती है और इसीलिए हमें-आपको आज की स्थिति का उत्तरदायित्व स्वीकार करना पड़ेगा। आजादी के बाद से जितनी भी सरकारें केंद्र और राज्यों में आईं उन्होंने असंख्य संकल्प लिए। इसी तरह राजनीतिक दलों ने भी चुनावों के समय या सत्ता में आने पर अनेक संकल्प लिए, लेकिन क्या उन्हें प्राप्त करने की दिशा में उन्होंने ठोस प्रयास भी किए? क्या यही स्वतंत्रता है कि हम संकल्प लेते रहें, लेकिन उन्हें लागू करने के दायित्व से विमुख रहें? क्या स्वतंत्रता की अवधारणा में कर्तव्य-बोध का कोई स्थान नहीं? आज पूरे देश में असंख्य सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक और राजनीतिक समस्याएं हैं और आगे भी रहेंगी। दुनिया का कोई भी देश समस्याओं से मुक्त नहीं हो सकता। महत्वपूर्ण यह है कि क्या हम समस्या समाधान के लिए कृतसंकल्प हैं? क्या अपने कर्तव्य बोध और उत्तरदायित्व को हम अपनी स्वतंत्रता का अभिन्न अंग बनाने का भी संकल्प लेंगे? सरकारें और गैर-सरकारी समूह व्यक्तियों से ही बनते हैं। इसलिए किसी समाज के वास्तविक उन्नयन के लिए व्यक्ति केसंकल्प सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण होते हैं। इस कारण स्वतंत्रता दिवस पर हमें न केवल पुराने संकल्पों का स्मरण करना चाहिए, वरन वैयक्तिक स्तर पर कुछ नए संकल्प भी लेने चाहिए और वह भी उन्हें पूरा करने के इरादे के साथ।

वर्तमान में आवश्यकता है कि हम बहुत ज्यादा नहीं हम केवल ये तीन छोटे-छोटे संकल्प ले लें तो बदलाव की एक शुरुआत करते दिखने लगेंगे। पहला संकल्प हमें यह लेना होगा कि हम जिस क्षेत्र में हो अपने काम में अपना सौ प्रतिशत दें, दूसरा संकल्प हमें यह लेना चाहिए कि हम अपना गुणात्मक उन्नयन करेंगे और इस क्रम में अपने हुनर में कुछ न कुछ बढ़ोतरी करते रहेंगे और अंतिम, संकल्प के रूप में हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम कोई ऐसा काम जरूर करेंगे जिससे समाज की कुछ-न-कुछ बेहतरी हो सके। अक्सर कहा जाता है कि स्वयं को बदलो, परंतु कोई यह नहीं बताता कि हम ऐसा करें कैसे? यदि हमने इन तीन संकल्पों को अमली जामा पहना दिया तो न केवल हम बदल जाएंगे, वरन समाज में भी गुणात्मक परिवर्तन हो सकेगा। इसी से भारत के सपनों को साकार करने में मदद मिलेगी। स्वतंत्रता के 76 वर्षों में देश ने बहुत प्रगति और विकास किया है। वैश्विक स्तर पर आज भारत की एक विशेष पहचान है, लेकिन सामाजिक स्तर पर जो मजबूती और उन्नयन हो सकता था उसमें अभी काफी सुधार की गुंजाइश है। राजनीतिक दलों ने लोकतंत्र के प्रक्रियात्मक पक्ष अर्थात चुनावों और सत्ता-प्राप्ति के साधनों पर तो ध्यान दिया, लेकिन उसके साध्य अर्थात लोक-कल्याण, सामाजिक समरसता, न्याय, समानता और राष्ट्र की एकता एवं अखंडता बढ़ाने वाले भाईचारे आदि पर ध्यान नहीं दिया।

आजादी के 76 वर्ष : उपलब्धियां, लक्ष्य एवं चुनौतियां

भारत को गुलामी की बेड़ियों से मुक्त हुए पिचहत्तर वर्ष पूरे हो चुके हैं। देश में चहुं ओर आजादी के अमृत महोत्सव की धूम मची हुई है। स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ से 75 सप्ताह पूर्व 12 मार्च 221 को प्रारंभ हुए इस उल्लास पर्व की इति 15 अगस्त 2023 को होगी। लेकिन अगर सच्चे मायनो में देखा जाए तो आजादी का अमृत महोत्सव हर्ष के साथ-साथ अभिलाषाओं, लक्ष्यों एवं चुनौतियों का एक संगम है, जिसे किसी समयसीमा में बांधना कहीं न कहीं अनुचित है। अमृत महोत्सव भारत की उस संपूर्ण जनता को समर्पित है, जिसकी न जाने कितनी पीढ़ियों ने मजबूर होकर अपना जीवन परतंत्रता के हवाले कर दिया, न जाने कितनी पीढियों ने भारत विभाजन की विभीषिका का मर्मस्पर्शी मंजर या तो अपनी आंखों से देखा अथवा उसकी चोट को बिना किसी मरहम के सहन किया, न जाने कितनी पीढ़ियों ने शिक्षा, अर्थव्यवस्था एवं विकास के पैमाने पर शून्य अथवा उसके इर्द गिर्द रहते हुए ही अपना जीवन गुजार दिया। यह एक कटुसत्य है कि गुलामी से लेकर 'हम भारत के लोग..' भारत को गुलामी की बेड़ियों से मुक्त हुए पिचहत्तर वर्ष पूरे हो चुके हैं। देश में चहुं ओर आजादी के अमृत महोत्सव की धूम मची हुई है। स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ से 75 सप्ताह पूर्व 12 मार्च 2021 को प्रारंभ हुए इस उल्लास पर्व की इति 15 अगस्त 2023 को होगी। लेकिन अगर सच्चे मायनो में देखा जाए तो आजादी का अमृत महोत्सव हर्ष के साथ-साथ अभिलाषाओं, लक्ष्यों एवं चुनौतियों का एक संगम है, जिसे किसी समयसीमा में बांधना कहीं न कहीं अनुचित है। अमृत महोत्सव भारत की उस संपूर्ण जनता को समर्पित है, जिसकी न जाने कितनी पीढ़ियों ने मजबूर होकर अपना जीवन परतंत्रता के हवाले कर दिया, न जाने कितनी पीढियों ने भारत विभाजन की विभीषिका का मर्मस्पर्शी मंजर या तो अपनी आंखों से देखा अथवा उसकी चोट को बिना किसी मरहम के सहन किया, न जाने कितनी पीढ़ियों ने शिक्षा, अर्थव्यवस्था एवं विकास के पैमाने पर शून्य अथवा उसके इर्द गिर्द रहते हुए ही अपना जीवन गुजार दिया। यह एक कटुसत्य है कि गुलामी से लेकर 'हम भारत के लोग..' तक का सफर एक लंबे, कठिन एवं संघर्षपूर्ण रास्ते से होकर गुजरा है। 15 अगस्त 1947 के पावन दिवस को भारत के गौरवशाली इतिहास में दर्ज करने की एक बहुत बड़ी कीमत स्वयं भारत को ही चुकानी पड़ी है। निस्संदेह वह सवेरा कितना सुंदर रहा होगा जो सैकड़ों वर्षों के अंधकार को खत्म करने के उपरांत हमारे भारतवर्ष के प्रत्येक आंगन में उदित हुआ था। किंतु लंबे समय तक परतंत्रता की जंजीरें और आजादी के एक दिन पूर्व अर्थात 14 अगस्त 1947 को बंटवारे की भयावह त्रासदी, ये ऐसे जख्म थे जिन्होंने हमारे भारत को एक घायल एवं असहाय स्थिति की ओर धकेल कर छोड़ दिया था।

हमें आजादी तो मिली लेकिन 15 अगस्त 1947 के भारत के सामने आजादी के जश्न में मगन होकर घूमने की खुशी के अवसर से कहीं अधिक महत्वपूर्ण था विभाजन के घाव को भरना, सैकड़ो वर्षों के दौरान शैक्षिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक अस्मिता पर अनवरत रूप से किए गए आघातों से बिगड़ी स्थितियों से उबरते हुए विकास के मार्ग की ओर स्वयं को उन्मुख करके, गतिहीन

हो चुके भारत में नवीन प्राण फूंककर उसे आगे बढ़ाना। अशिक्षा, जर्जर हो चुकी अर्थव्यवस्था, महिलाओं की दयनीय स्थिति, सामाजिक विषमताएं एवं गरीबी, ये कुछ ऐसी ज्वलंत समस्याएं थीं जो एक गंभीर चुनौती की भांति मुंह खोलकर खड़ी थीं, वह भी एक ऐसे भारत के समक्ष जो उस समय कहीं न कहीं विवशता से घिरा था।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि 75 वर्षों का सफर तय करते-करते हमने उपलब्धियों की एक इमारत खड़ी कर दी है। विश्वगुरु का जो दर्जा हम कहीं न कहीं खो चुके थे, उसे पुनः प्राप्त करने की दिशा में हमारे कदम तेजी से बढ़ते जा रहे हैं। सर्वप्रथम यदि शिक्षा की बात करें तो इस क्षेत्र में भारत ने अभूतपूर्व प्रतिमान स्थापित किए हैं। 1947 में जो साक्षरता दर 12 प्रतिशत थी, वह 2021 के आंकड़ों के अनुसार 77.7 प्रतिशत तक पहुंच चुकी है। प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक एक बड़ी संख्या में शिक्षण संस्थान अस्तित्व में आ चुके हैं। और तो और, आईआईटी जैसे संस्थान आज भारत से बाहर विदेशों में भी अपना कैंपस खोल चुके हैं। किसी देश की प्रगति हेतु एक मजबूत आधारभूत ढांचा अनिवार्य आवश्यकता है। आज भारत इंफ्रास्ट्रक्चर के मामले में विकास के उच्च आयामों को स्पर्श कर चुका है। 2021 के आंकड़े के अनुसार देश में राष्ट्रीय राजमार्गों की कुल लंबाई 137625 किलोमीटर है, साथ ही साथ शहरीकरण का प्रतिशत 35.39 हो चुका है। सड़क एवं रेल के साथ-साथ उड्डयन के क्षेत्र में भी हम रफ्तार पकड़ चुके हैं। भारत की महिलाएं जोकि कुल आबादी का अड़तालीस प्रतिशत हैं, आज वैश्विक स्तर पर अपनी उपस्थिति दर्ज कर रही हैं। आजादी के समय जो महिला साक्षरता दर 9 प्रतिशत के आसपास थी, वह आज 70 प्रतिशत तक पहुंच चुकी है। उच्च शिक्षा, सरकारी सेवा, राजनीति, व्यापार आदि प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की प्रतिभागिता एवं वर्चस्व बढ़ता जा रहा है। स्वतंत्रता के उपरांत भारत के समक्ष जो सबसे बड़ी, गंभीर एवं कठिन चुनौती थी, वह थी देश को निर्धनता के चंगुल से बाहर निकालना। विश्व की पांचवीं अर्थव्यवस्था का स्थान ले चुका भारत जल्द से जल्द तीसरी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है।

निश्चित रूप से आजादी से अब तक के सफर को हमने उत्तरोत्तर प्रगति के सफर का रूप दिया है, किंतु आज के परिदृश्य में भी हमारे समक्ष अनेक लक्ष्य एवं चुनौतियां विद्यमान हैं। आज तकनीकी का दौर है। शिक्षा के साथ साथ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पूर्णरूपेण तकनीकी का समावेश हो चुका है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, मशीन लर्निंग, वर्चुअल रियलिटी जैसी तकनीकों के अस्तित्व में आ जाने के बाद हमारे समक्ष सबसे बड़ी चुनौती यह है कि हम अपना सामंजस्य तकनीकी के साथ इस तरह से बिठाएं कि वह हमारे लिए किसी संकट की बजाय एक वरदान साबित हो सके। हमें शिक्षा प्रणाली को बदलती हुई सदी के साथ इस तरह से जोड़ना है कि यह युवाओं को उज्जवल भविष्य की ओर पथप्रशस्त कर सके। कुछ अन्य ऐसी चुनौतियां हैं जिन पर विजय पाना, विकसित राष्ट्र का रूप लेने के लिए अनिवार्य है, जैसे महिला सुरक्षा, पर्यावरण जागरूकता, साइबर सुरक्षा, वैश्विक तापन, जनसंख्या वृद्धि इत्यादि। 9 अगस्त 2023 से 30 अगस्त 2023 तक चलने वाले 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान एवं इसके अंतर्गत किए जाने वाले पंचप्रण वस्तुतः प्रत्येक भारतवासी के लिए एक शपथ के समान हैं। इसके अंतर्गत प्रत्येक भारतवासी दासता की मानसिकता से मुक्त होकर, भारत की समृद्ध विरासत पर गर्व करते हुए, भारत का नागरिक होने का कर्तव्य निभाकर भारत की एकता को सुदृढ़ बनाने एवं 2047 तक आत्मनिर्भर एवं विकसित भारत का स्वप्न साकार करने में अपना पूर्ण योगदान करेगा।

स्वतंत्रता की 77वीं वर्षगांठ-कितने स्वतंत्र, कितने परतंत्र?

हम इस दिन को गर्व के साथ मनाते हैं क्योंकि औपनिवेशिक अत्याचार से मुक्त कराने के लिए हमारे देश के लोगों ने अपना बलिदान दिया है। क्योंकि यह दिन उन संघर्ष की कहानी कहता है जिसमें कितने मां लालों ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिये,हम इस शुभ दिन पर सुभाष चंद्र बोस, भगतसिंह, सुखदेव चंद्र शेखर आजाद और अनगिनत दूरदर्शी बलिदानी वीर पुत्र जिनके संघर्ष की गाथा से हम अब तक अनजान हैं के सम्मान में याद करते हैं, जिन्होंने अदम्य दृढ़ता और बहादुरी के साथ मुक्ति की लड़ाई का नेतृत्व किया और अंग्रेजों की गुलामी से आजादी दिलाई।

प्राचीन काल में विश्व का शिक्षा केंद्र होने से लेकर आज विश्व का आईटी केंद्र बनने तक, भारतीय परिदृश्य ने एक लंबा सफर तय किया है। 15 अगस्त 1947 को अपने संदर्भ के रूप में लेते हुए , हम पाते हैं कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी, अर्थव्यवस्था और मानव विकास जैसे कई क्षेत्र हैं जहां भारत ने उल्लेखनीय प्रगति दिखाई है। हालाँकि, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे अभी भी कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर भी ध्यान दिया जाना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि वर्तमान परिवेश में जिस तरह की शिक्षा प्रणाली और व्यवस्था को प्रोत्साहन दिया जा रहा है उससे आज की मानव जाति शिक्षित तो कहला रही है परंतु ज्ञान से वंचित हो रही है। शीर्ष 100 क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग में एक भी भारतीय विश्वविद्यालय या संस्थान नहीं है। दुनिया में सबसे बड़ी युवा आबादी के साथ, भारत चमत्कार कर सकता है यदि इसके युवा उचित कौशल और शिक्षा से सुसज्जित हो जाएं। और इस का मुख्य कारण है आज भी भारत को अपनी स्वतंत्रता के बाद कई मुद्दों का

सामना करना पड़ रहा है, जिनमें अशिक्षा, भ्रष्टाचार, गरीबी, लिंग भेदभाव, अस्पृश्यता, क्षेत्रवाद और सांप्रदायिकता और देश की गंदी राजनीति का परिवेश शामिल हैं, जितने भी देश आज अपने विकसित होने के उपलब्धि प्राप्त कर चुके हैं सर्वे किया जाए तो उनको इस उपलब्धि पर पहुंचाने वाले भारतीय नागरिक ही है परंतु समय रहते हमने अपने देश की प्रतिभाओं का सम्मान नहीं किया क्योंकि हम तो एक दुसरे को नीचा दिखाने, लोभ-लालच प्रलोभन भ्रष्टाचार, आरक्षण, साम्प्रदायिकता जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर व्यस्त थे और हमारी इस कमी का फायदा दुसरे देशों ने बखूबी उठाया और हमारे देश की प्रतिभाओं को सही दिशा और सम्मान देकर स्वयं को विकसित बना लिया, और हमारी आंखें आज भी बंद है और पता नहीं कब हम जागेंगे।भारत के विभिन्न परिदृश्यों का विश्लेषण करने पर हम पाते हैं कि हमने अपनी यात्रा में काफी लंबा सफर तय किया है, लेकिन अगर हम भारत को श्सुपर पावरश् बनाना चाहते तो बहुत कुछ किया जा सकता था और अभी भी किया जा सकता है आवश्यकता है इस विक्षिप्त अवस्था से बाहर आने की, अपने अधिकारों, अपनी सही मायने में प्राप्त स्वतंत्रता की, और यह सब बहुत कुछ हमारे लोगों की बदलाव की इच्छा पर निर्भर करेगा, कार्यबल में महिलाओं की समान भागीदारी सुनिश्चित करना, हमारे आर्थिक विकास में हाशिए पर रहने वाले समुदायों को शामिल करना और अंतिम लेकिन महत्वपूर्ण बात उदार और प्रगतिशील और निष्पक्ष मानसिकता रखना है।

जैसा कि हम 'आजादी का महोत्सव' मना रहे हैं, आजादी के 76 साल पूरे होने को हमारी आकांक्षाओं का भारत बनाने और भारत के बदलते परिदृश्य में जागरूक और सकारात्मक योगदान देने के एक नए अवसर के रूप में लिया जा सकता है, और जिस स्वतंत्र भारत की कल्पना लेकर हमारे वीर बलिदानी शहीद हो गए उनके सपनों को साकार रूप देकर ही हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दे पाएंगे।

प्रेम पड़ोस में उपजे, इंस्टाग्राम दिखाय...?

बेचारे कबीरदास जी हमारे बीच नहीं हैं। अगर मौजूद होते तो उन्हें अपने दोहे कि इस पंच लाइन को बदलता पड़ता। श्प्रेम न बारी उपजे, प्रेम न हाट बीकाए। 'राजा प्रजा जो ही रुचे, सिस दे हीं ले जाएश। उनका कहना था कि प्रेम कहीं खेतों में नहीं उगता और न हीं बाजार में बिकता है। लेकिन इन्हें क्या पता था कि बदलते दौर में प्रेम इंटरनेशनल हो गया है। फिर उन्हें इस दोहे की जगह यह लिखना पड़ता श्प्रेम पड़ोस में उपजे, इंस्टाग्राम दिखाय। जो समझै जौहरी वह बीबी घर लायश। चलिए बेचारे कम से कम इस मुशीबत से तो बच गए।

अब कबीरदास जी को हम क्या कहें। विशेष रूप से उनके इस दोहे पर श्प्रेम गली अति सांकरीश। यहां तो प्रेम गली सांकरी है ही नहीं। पूरा का पूरा एशिया और यूरोप समा गया है। सात समंदर के फासले भी सिमट गए हैं। अमर प्रेमियों लैला-मजनू, शिरी-फरहाद, हीर-रांझा सोनी-महिवाल, मिर्जा साहिबा की ऐतिहासिक प्रेम कहानियां भी शर्मा रहीं हैं। हमें तो लगता है कि आने वाले समय में प्रेम के इतिहास में यह प्रेम कहानियां खोजने से नहीं मिलेगी। गूगल बाबा तो सबसे पहले अपनी पबजी वाली भौजी की प्रेम कथा दिखाएंगे।

अब देखिए ! अपनी पबजी वाली भौजी पूरा इंटरनेशनल वाली हीरोइन बन गई है। अब वह फिल्म में हीरोइन भी बनेंगी और पॉलटिक्स भी करेंगी। आजकल हमारी सीमाओं पर लव शेयरिंग हो रही। बेचारे कुंवारों के लिए तो सोशलमीडिया की लव पाठशाला एक उम्मीद लेकर आयी है। उन्हें लगने लगा है अब घूरे के दिन भी बहुरेंगे। क्योंकि अभी तक इंटरनेशनल क्रिकेट मैच होते थे लेकिन अब लव मैच होने लगा है। लव डिप्लोमैसी एक एक नया प्रयोग है। यह दुनिया के लिए बड़ा संदेश है। हम अपने प्रेमियों की इस पहल की प्रशंसा करते हैं। बेचारे जुकरबर्ग को हम लाख-लाख शुक्रिया देते हैं। क्योंकि फेसबुक न होता तो हम सीमा पार वाली भौजी कहां से लाते। फिर लव का वर्ल्डकप कैसे शुरू होता। हमें लवगुरु का धन्यवाद करना ही पड़ेगा।

समस्त देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ व बधाई

नैक बी+ ग्रेड

स्वामी शुकदेवानन्द विधि महाविद्यालय

मुमुक्षु आश्रम, शाहजहाँपुर–242226

(सम्बद्ध महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली एवं बार काउन्सिल ऑफ इंडिया, नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त)

स्वामी शुकदेवानन्द विधि महाविद्यालय–एक दृष्टि

स्वामी शुकदेवानन्द विधि महाविद्यालय, जिसे लोकप्रिय रूप से एस.एस. कालेज के नाम से जाना जाता है, विधि के क्षेत्र में अध्ययन–अध्यापन के लिए समर्पित एक शैक्षणिक संस्थान है। महाविद्यालय की स्थापना परमपूज्य स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती जी महाराज द्वारा स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज की स्मृति में 3 मार्च 2003 को की गई थी। वर्तमान में यह राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 24 पर स्थित है। महाविद्यालय में एलएल.बी. (त्रिवर्षीय), एलएलबी (पंचवर्षीय) और एलएल.एम. (द्विवर्षीय) पाठ्यक्रम सफलता पूर्वक संचालित होते हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, छात्रों के उत्तम परिणाम, आधुनिक शिक्षण संस्थान, सुसज्जित एवं प्रदूषण मुक्त हरा भरा परिसर और खेल आदि विभिनन क्षेत्रों में उपलब्धियां महाविद्यालय की विशेषताएं है।

कॉलेज को भारतीय विधिज्ञ परिषद (नई दिल्ली) द्वारा अनुमोदित किया गया है, यू.जी.सी. धारा 2 (एफ) और 12 (बी) के अंतर्गत स्व–वित्त पोषित कॉलेज के रूप में मान्यता प्राप्त है और स्थायी रूप से महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली से सम्बद्ध है। वर्ष 2017 में कॉलेज को नैक द्वारा बी + ग्रेड की मान्यता मिली थी। एसएस लॉ कालेज वर्ष 2003 में अपनी स्थापना के बाद से बहुत कम समय में एक प्रमुख शैक्षणिक विधि संस्थान के रूप में उभरा है। विश्वविद्यालय स्तर पर इसकी गणना सर्वोच्च 5 महाविद्यालयों में होती है।

महाविद्यालय की उपलब्धियां

- नगर का प्रथम विधि महाविद्यालय।
- बी.सी.आई. मानको के अनुसार सीटों की अधिकतम संख्या।
- महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय का प्रथम विधि महाविद्यालय है, जिसे विधि परस्नातक (एलएल.एम.) पाठ्यक्रम की अनुमति प्राप्त हुई है।
- **प्रतिष्ठित पूर्व छात्र** – न्यायिक अधिकारियों, लोक अभियोजक, सहायक अध्यापक, बैंक अधिकारियों एवं सर्वोच्च न्यायालय तथा विभिन्न उच्च न्यायालयों में अधिवक्ता।
- **उत्कृष्ट परिणाम** – वर्ष 2011, 2013, 2016–2017 में कालेज के कई छात्रों ने स्वर्ण पदम हासिल किया।
- **उत्कृष्ट खेल सुविधाएं** – छात्र–छात्राओं के लिये महाविद्यालय में इन्डोर स्टेडियम तथा क्रीड़ागन की सुविधा उपलब्ध है।
- कालेज के द्वारा पुस्तकें और पत्रिकाएं भी प्रकाशित की गई है। महाविद्यालय द्वारा अब तक 10 से अधिक राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन किया गया है जिनमें केन्द्रीय विश्वविद्यालय एवं राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के कुलपतियों, संकायाध्यक्षों, विभागाध्यक्षों एवं विधि के प्राध्यापकों ने प्रतिभाग किया।
- समृद्ध, वातानुकूलित पुस्तकालय एवं ई–लाइब्रेरी।
- वातानुकूलित मूट कोट, सभागार की सुविधा।
- शीतवाद नियंत्रित अध्ययन कक्ष, अध्यापकों तथा गैर शैक्षणिक कर्मचारियों के लिये सुव्यवस्थित कक्ष एवं आधुनिक सुविधायें।

स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती
अध्यक्ष, प्रबंध समिति

डा. अवनीश कुमार मिश्रा
सचिव

डा. जयशंकर ओझा
प्राचार्य

लोक पहल, राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक, मुमुक्षु आश्रम, शाहजहॉपुर, प्रधान संपादक अरूण पाराशरी

लोक पहल हिन्दी साप्ताहिक स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डा. अवनीश कुमार मिश्रा द्वारा शाहजहॉपुर प्रिन्टर्स जज साहब वाली गली, तारीन बहादुरगंज जिला शाहजहॉपुर 242001 से मुद्रित व 160 रोशनगंज लक्ष्मी राईस मिल, शाहजहॉपुर 242001 उ0प्र से प्रकाशित। संपादक–सुयश सिन्हा मो. 9935740205 E-mail : lokpahalspn@gmail.com समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र शाहजहॉपुर होगा।

शाहजहांपुर के स्वतंत्रता आन्दोजन के अंतिम शहीद पं. बाबूराम शर्मा

कमल मानव

शाहजहांपुर को यूं ही शहीदों की धरा नहीं कहा जाता। यहां की धरती वतन पर मर मिटने वालों को पैदा करने में काफी उर्वरा रही है। स्वाधीनता आन्दोलन में पं. राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां व ठाकुर रोषन सिंह की सहादत को पूरा देश नमन करता है लेकिन शाहजहांपुर के रणबाकुरों की सहादत का सिलसिला यहीं पर नहीं थमा। शाहजहांपुर के एक और शहीद हुए हैं पं. बाबूराम शर्मा, जिनके बारे में लोग काफी कम जानते है। 9 अगस्त 1925 को हुए प्रसिद्ध काकोरी कांड के बाद अंग्रेजी सरकार ने इस घटना कोअंग्रेजी सत्ता के खिलाफएक सशस्त्र विद्रोह माना और इसके लिए क्रूरतम दंड फांसी की सजा निश्चित की गई। पंडित रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां और ठाकुर रोशन सिंह की फांसी के बाद शाहजहांपुर जनपद में क्रांतिकारी गतिविधियों को विराम सा लग गया था। नेतृत्व के अभाव में स्वतंत्रता के ध्येय को पूर्ण करने हेतु क्रांतिकारियों ने गांधी जी के मार्ग का अनुसरण किया।

अगस्त 1942 के प्रथम सप्ताह की एक रात अंग्रेजी सत्ता और गुलाम प्रशासन के लिए एक और विपल्वी घटना हुई जिसका नेतृत्व स्वतंत्रता संग्राम के अनल यज्ञ में अपने प्राणों की आहुति देने वाले शाहजहांपुर के चौथे और अंतिम शहीद पंडित बाबूराम शर्मा ने किया था। वह घटना थी टिकरी,शाहजहांपुर के रेलवे स्टेशन पर रेलवे लाइन काटना और टेलीफोन लाइन को ध्वस्त करना। इस घटना के लिए अंग्रेज सरकार ने शाहजहांपुर से निगोही तक के ग्रामों पर सामूहिक जुर्माना किया और गया सिंह निवासी गिरगिचा, निगोही व विजई सिंह निवासी परसोना खलीलपुर को छह छह माह का कारावास और 4० चालीस रुपए के अर्थदंड की सजा इस बात के लिए हुई कि इन लोगों ने ग्राम कोका की बाजार में भाषण दिया था कि किसी सरकारी आदेश को न माना जाए, रेल लाइन काट दी गई है टेलीफोन के तार तोड़ दिए गए हैं। सरकार को भी उखाड़ फेंकना है। बरतानियां सरकार मुर्दाबाद। इस घटना में पंडित बाबूराम शर्मा के साथ उनके ग्राम के परसादी लाल लुहार और पीलीभीत जिले के रामस्वरूप दुबे शामिल थे। यह पूरी घटना लेखक ने स्वयं परसादी लाल से ही सुनी और जानी। इस घटना से सिद्ध होता है कि जनपद के सभी गांधीवादी आंदोलनकारी प्राय: क्रांतिकारियों से प्रभावित थे।

16 अक्तूबर 19०9 को पंडित रामेश्वर दयाल मिश्र और माता सुमित्रा देवी की प्रथम संतान के रूप में शाहजहांपुर की सदर तहसील के ग्राम अख्त्यारपुर बघौरा में जन्मे पंडित बाबूराम बाल्यकाल से ही प्रखर मेधा, शारीरिक बल और साहस की प्रतिमूर्ति थे। उनका परिवार नितांत धार्मिक और कर्तव्यनिष्ठ था। उनकी प्राथमिक शिक्षा उनकी माता और दंडी संत स्वामी कृष्णा आश्रम के द्वारा हुई। जूनियर हाई स्कूल कांट में बरनाक्युलर करते समय ही वे पंजाब के एक क्रांतिकारी डा बलबीर सिंह के संपर्क में आए और कांग्रेस के युवक संघ का नेतृत्व करने लगे। उन्हें जनपद में संगठन का कार्य सौंपा गया जिसे उन्होंने गांधी जी द्वारा चलाई जा रही प्रत्येक गतिविधि को चलाकर जिले और विशेषकर कांट और जलालाबाद क्षेत्र में उन्होंने आंदोलनकारियों का एक बड़ा संगठन खड़ा कर दिया। 22 अप्रैल 1941 को मैजिस्ट्रेट एहसान अली ने व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने तथा सत्याग्रहियों का संगठन बनाने के साथ ही सरकार का हर प्रकार विरोध करने पर धारा 38 (1) के तहत 6 माह कठोर कारावास और 75 रुपए जुर्माना की सजा सुनाई। जुर्माने की धनराशि न अदा करने पर उन्हें तीन माह का अतिरिक्त कारावास दिया गया। उस समय जेल आंदोलनकारियों से खचाखच भरी थी। आए दिन किसी न किसी घटना को लेकर सत्याग्रही अनशन करते थे। वे 9 माह का कठोर कारावास समाप्तकार जनवरी 1942 में अपने गांव लौटे और पुन: कांग्रेस के आदेशों के परिपालन में व्यस्त हो गए। 7अगस्त 1942 को गांधी जी ने अंग्रेजो भारत छोड़ो के नारे के साथ भारत छोड़ो आंदोलन का प्रारंभ किया जिसकी आंच शाहजहांपुर में भी तेजी से आई। प्रशासन ने चिन्हित आंदोलनकारियों को नजरबंद करने का निर्णय लिया।

9 अगस्त1942 को पंडित बाबूराम शर्मा को थाना कांट पुलिस के एक दरोगा व पांच सिपाहियों द्वारा फूलों की हथकड़ी डालकर, फूलमाला पहनाकर ढोल बजवाते हुए आसपास के गांवों की भारी भीड़ के सामने चालाकी से गिरफ्तार कर उसी दिन शाहजहांपुर जिला जेल में नजरबंद कर दिया गया। स्थानीय पुलिस की यह चाल उन्हें सम्मानजनक तरीके से बिना किसी प्रतिरोध के संपन्न हो गई। भारत छोड़ो आंदोलन एक निर्णायक आंदोलन था। जेल आंदोलनकारी नजरबंद सेनानियों से भरी थी। बहुत अधिक संख्या हो जाने के कारण कुछ आंदोलनकारियों को अन्य जेलों में स्थानांतरित किया गया। पंडित जी अपने साथियों में गीता पर प्रवचन कर आत्मा की अमरता का सिद्धांत समझाकर आंदोलनकारियों का मनोबल बढ़ाते और देश के स्वतंत्र होने की आशा करते। स्वतंत्रता सेनानी मुक्ताप्रसाद और बसंतलाल खन्ना के अनुसार व्यापक असरदार नेतृत्व और जेल के अंदर से बाहरी गतिविधियां चलाने के संदेह में उन्हें जेल में धीमा जहर दिया जाने लगा। अंतत: मात्र 36 वर्ष की अवस्था में बिना किसी बीमारी के अच्छी कद काठी वाले इन बलिष्ठ महापुरुष की जेल प्रशासन ने धीमा जहर देकर हत्या कर दी। यही कारण था की इन शहीद का शव उनके परिवार को नहीं सौंपा गया। शहर के मोहल्ला मोती चौक निवासी सेठ बनबारीलाल को तत्काल शवदाह कराने की शर्त पर उनका शव सौंपा गया। इसके पश्चात खन्नौत के टेढाघाट पर शहर के कुछ गणमान्य लोगों और उनके परिजनों की उपस्थिति में उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया। अत्यंत सामान्य परिवार से देशभक्ति का सर्वोच्च बलिदान देने वाले पंडित बाबूराम शर्मा शाहजहांपुर के चौथे और स्वतंत्रता संग्राम के अंतिम शहीद के रूप में सदैव याद किए जायेंगे। उनका स्मारक उनके पैतृक ग्राम अख्त्यारपुर बघौरा में स्थित है तथा उनके नाम से ग्राम के प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालय संचालित हैं।

स्वाधीनता क्रान्ति की अलख जगाई थी भीकाजी कामा ने

रानी प्रियंका वल्लरी
हरियाणा

ऐसे अनगिनत लोग थे जो भारत को आजाद कराने में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा। हम लोगों के जुबानी कुछ ही लोगों के किस्से उतरते हैं। इसमें पुरुष महिला हर समुदाय के लोग थे. आज जहां देश में सरकारी से निजी संस्थान सब में पुरजोर तरीके से आजादी के जश्न की तैयारी हो रही हैं। मैं आज स्मरण करना चाहूँगी भीकाजी कामा को जो स्वभावत: जिद्दी और वुसुलों पर जीने वाली हिम्मती और न्याय विचारधारा की महिला थी सामाजिक कार्यों में रूचि रखने के साथ भारत के सेवा में भी समर्पित थी।

वह संगठन का निर्माण करती थी। दिन रात एक कर देती थी भारत को आजाद करने के तरकीब ढूंढ़ने में। भीकाजी कामा एक प्रसिद्ध व्यापारी रूस्तम कामा की पत्नी थी इनका जन्म 24 सितम्बर 1861 को मुंबई के एक पारसी परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम सोराब जी फ्रैमजी पटेल और माता का नाम जैजीबाई सोराब जी था। यह भारतीय मूल की फ्रांससी नागरिक थी। भीकाजी कामा को मैडम कामा या मैडम रूस्तम कामा के नाम से प्रसिद्ध थी।

उन्होंने विनायक दामोदर सावरकर और हरदयाल जी के साथ मिलकर भारतीय क्रांतिकारियों को कूच करने के लिये स्वाधीनता की क्रांति का एक उपयुक्त वातावरण तैयार किया। यह वह महिला थी जो 1947 से चालीस वर्ष पहले 197 में ही जर्मनी के एक भाषण के दौरान बातों बातों में स्वतंत्रता की हक में भारत का झंडा लहरा दी.झंडे लहराने बाद भारत के युवाओं को जोरदार भाषण में संबोधित करते हुए कही. यह भारत का ध्वज है इसमें ना जाने कितने वीर सपूतों ने लहू बहायें हैं इसे खड़े होकर वंदन करो। ऐसा माना जाता है की भारतीय ध्वज के इतिहास के पहले झंडे का प्रारूप

भीकाजी कामा और उनके सहयोगियों ने ही तैयार किया था। साम्राज्यवाद के विरुद्ध थी वह भारत के स्वाधीनता आंदोलन को प्रथम श्रेणी में रखती थीं साम्राज्यवाद को खत्म करना चाहती थी. विभिन्न धर्मों तथा संस्कृति को एकजुट कर स्वतंत्रता का बिगुल फुंकती.वह अहिंसा में विश्वास रखती थीं अन्यायपूर्ण हिंसा के लिए आवाज उठाती थी। वहां इन बातों से अंग्रेजो में खलबली मच गई। मैडम कामा को गिरफ्तारी की वारंट मील गई। वह हर देश के पत्रकारों को आमंत्रित करती थी अपनी बात पहुँचाने के लिये विदेशों में भ्रमण के दौरान भारत के दशा दिशा पर बातें करती थीं. वह तर्क रखती थीं, चुनौती देती थी.हर चुनौती को सहज स्वीकार भी करती थीं। एक समय प्लेग बीमारी ने लोगों को मुंबई में काफी प्रभावित किया. मैडम कामा ने स्वेच्छा से रोगियों की सेवा की,रोगियों के देख – रेख करते करते खुद बीमार पड़ गई। उनकी हालातों को देखकर डॉक्टर ने उन्हें यूरोप जाने की सलाह दी। वह यूरोप चली गईं। उन्होंने वंदे मातरम् जैसे पत्रों का प्रकाशन किया। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में इस पत्रिका का काफी प्रभाव पड़ा। यह पत्रिका अत्यंत लोकप्रिय हुई। मैडम कामा दादा भाई नौरेजी के यहां सेक्रेटरी के पद पर काम भी की थी. माना जाता हैं इनसे ब्रिट्रिश शासन के बारे में जानकारी दी। लंदन जाकर पुस्तक प्रकाशन का भी काम किया।

आजाद देश में आखिर महिलाओं को स्वतंत्रता कब?

पूजा गुप्ता, मिर्जापुर

आजादी का मतलब भारत से बेहतर कौन समझ सकता है। कई सालों तक अंग्रेजों के गुलाम बनकर रहने के बाद जब भारत को स्वतंत्रता मिली तो ये दिन इतिहास के पन्नों में सुनहरे अक्षरों में दर्ज हो गया। आजादी को पाना आसान नहीं था। भारत के कई वीर सपूतों, बेटियों ने अपनी जान तक देश के लिए न्यौछावर कर दी। आजादी के लिए सालों संघर्ष हुआ। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई से लेकर मंगल पांडे तक और महात्मा गांधी से लेकर चंद्रशेखर आजाद व भगत सिंह जैसे हजारों स्वतंत्रता सेनानियों ने अपना जीवन आजाद भारत के सपने को पूरा करने में बिता दिया। आखिरकार 15 अगस्त 1947 को देश स्वतंत्र हो गया। भारत के पहले प्रधानमंत्री ने लाल किले की प्राचीर से ध्वजारोहण किया। आजादी के 76 साल पूरे होने पर देश में काफी बदलाव आया लेकिन नहीं बदली तो आजादी के जश्न की परंपरा। हर साल 15 अगस्त को लाल किले से ध्वजारोहण किया जाता है। गुलाम भारत के दौर में हम नहीं थे, लेकिन उस समय के नजारा कैसा होगा इसकी सिर्फकल्पना कर सकते हैं।

आजादी के पहले भारत का प्राचीन नाम अजनाभवर्ष था। ऋषभदेव के सौ पुत्रों में सबसे बड़े पुत्र भरत के नाम पर बाद में भारतवर्ष पड़ा। भारत में जो सबसे पहले जिला आजाद हुआ था उसका नाम पंजाब का गुरदासपुर था। भारत में पहली सरकार सत्ता परिवर्तन के बाद, 15 अगस्त 1947 को, जवाहरलाल नेहरू ने भारत के पहले प्रधान मंत्री के रूप में पदभार संभाला और प्रथम नेहरू मंत्रालय बनाने के लिए पंद्रह मंत्रियों को चुना।

भारत की आजादी मे योगदान देने वाले भगत सिंह, महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस, जवाहरलाल नेहरू, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, लाला लाजपत राय, लाल बहादुर शास्त्री और बाल गंगाधर तिलक शामिल हैं। इनके साथ ही कई और देशभक्त और हजारों भारतीय देशभक्त ने ब्रिटिश आधिपत्य से मुक्ति के लिए योगदान दिया। भारत की आजादी के संघर्ष में महिलाओं ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। भिकाजी कामा, डॉ एनी बेसेंट, प्रीतिलता वाडेकर, विजयलक्ष्मी पंडित, राजकुमारी अमृत कौर, अरुना आसफ अली, सुचेता कृपलानी और कस्तूरबा गाँधी कुछ प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानियों में शामिल हैं। अन्य उल्लेखनीय नाम हैं मुथुलक्ष्मी रेड्डी, दुर्गाबाई देशमुख आदि। वो स्वर्ण अवसर था पर क्या अब है?

आजादी के 76 साल पूरे हो गए हैं। पर देशवासियों के दिल में आज भी उन शख्सि यतों के लिए प्यार और सम्मान कम नहीं हुआ है, जिन्होंने आजादी की खातिर अपनी जान गंवा दी। आजादी के लिए कुर्बानी देने और देश के लिए लड़ने वाले वीरों में देश की वीरांगनाओं का भी योगदान रहा है। जहां एक ओर हमारा देश आजाद हुआ। उस समय की महिलाओं ने आजाद भूमिका निभाई। क्या आज के वर्तमान स्वरूप में नारियों को उतनी आजादी है क्या? हम 76वे स्वतंत्रता दिवस का जश्न मना रहे हैं पर क्या हमारा देश इस मौके पर महिलाओं को आजादी, समान अधिकार और सुरक्षित देश दिलाने की पहल और जमीनी स्तर पर प्रयास करके इस जश्न को दोगुना कर सकता है?

76वे स्वतंत्रता दिवस का जश्न हम मना रहे हैं पर देश की आजादी के इतने सालों बाद भी हमारा देश महिलाओं को एक ऐसा माहौल नहीं दे पाया है, जहां उनको यह लगे कि हम आजाद हैं, सुरक्षित हैं और समान हैं। यह कहते हुए मुझे तकलीफहो रही है पर अफ्सोस यही हमारे देश की आज की सच्चाई है।

कोई अपनी सहूलियत के हिसाब से कुछ उदाहरण देकर यह जताने की कोशिश भी करेगा कि पहले की तुलना में अब वर्तमान में महिलाओं के हालात ज्यादा बेहतर हैं पर ऐसा कहना और समझना ही सबसे बड़ी वजह है कि हम असल समस्या की अनदेखी कर रहे हैं और इस अनदेखी का नतीजा यह है कि महिलाओं की हालत में थोड़ा सा भी सुधार नहीं हो रहा है।

जेंडर गैप इंडेक्स में हम 156 देशों में से 14० वे स्थान पर हैं। वीमेन, पीस – सिक्योरिटी इंडेक्स (महिलाओं की सुरक्षा एवं शांति सूची) में हम 133वे स्थान पर हैं। हमारे देश में महिलाओं के साथ होने वाली घरेलू हिंसा 29%है। ह्यूमन डेवलपमेंट इंडेक्स में हमारा देश 131वे स्थान पर है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, हमारे देश में महिलाओं के साथ होने वाले अपराधों में रोजाना 88 रेप की घटनाएं होती हैं। हमारे देश में महिलाओं का लेबर फोर्स पार्टिसिपेशन 22.3 प्रतिशत है। अब मैं बात करती हूं हमारे आदर्श समाज की, जो महिलाओं के सम्मान का झूठा दिखावा करता है। महिलाओं को देवी कहता है। यह बताता है, महिलाएं मल्टी टास्कर होती हैं। यह उनकी क्वालिटी (गुणवत्ता) है। हमें उदाहरण देकर बताता है कि महिलाओं में त्याग और बलिदान कूट-कूट कर भरा हुआ होता है। इन सभी बातों से ऐसा लगता है कि महिलाएं केवल समाज के फायदे के लिए ही पैदा होती हैं, उनकी अपनी कोई पहचान नहीं होती है। उनका अपना कोई वजूद नहीं है। इन सब चीजों से समाज का जेंडर बायस होना साफदिखता है। संस्कार और संस्कृति के नाम पर हमारा समाज महिलाओं की आजादी पर पाबंदियां लगाता है। उनको सामाजिक नियमों की बेड़ियों में जकड़ कर रखता है। जब तक समाज की संस्कृति में महिलाओं के समान अधिकार, उनकी आजादी को जगह नहीं मिलती तब तक महिलाओं के हालात बेहतर नहीं हो सकते हैं। महिलाओं को देवी कहकर यह समाज खुद महान बन जाता है और जब भी महिलाएं समाज के सामाजिक नियमों को तोड़ने की कोशिश करती हैं, इन्हें चुनौती देती हैं तब यही समाज, जो महिलाओं को देवी कह रहा था। वह इन महिलाओं को समाज एवं संस्कृति के लिए कलंक बताता है।

दहेज प्रथा को यह समाज आज भी अपना हक समझता है और संस्कृति एवं सामाजिक नियमों के नाम पर हो रही घरेलू हिंसा को जायज ठहराने की कोशिश करता है। अगर कोई महिला किसी जघन्य घटना की शिकार होती है तो उस से ही सवाल पूछता है और उसको ही उसके साथ हुई घटना के लिए जिम्मेदार ठहराता है। जिस दिन हमारा समाज महिलाओं की पहचान, उनके वजूद को स्वीकार करेगा तब उस दिन हम समझेंगे कि समाज में महिलाओं का स्थान सम्मान- जनक है। महिलाओं के लिए सुरक्षा संबंधित कानून बनाने से क्या फायदा है जब महिलाएं सुरक्षित नहीं? महिला दिवस पर मंच पर बड़े-बड़े नेताओं द्वारा महिलाओ के लिए भाषण देने से क्या फायदा है? आज भी बड़ी दरिंदगी के साथ महिलाओं के साथ अत्याचार होता है। टुकड़ों मे बंट जाने वाले देश में महिलाओं के भी टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाते हैं। घर की चारदिवारी में आज भी महिलाएं सुरक्षित नहीं। अपने ही देश के नागरिक अपने ही देश की महिलाओं पर गलत टिप्पणी करते नजर आते हैं, मुझे लगता है कि अभी औरतों को आजादी नहीं मिली है भले ही देश आजाद हो गया हो। यह बहुत ही चिंताजनक स्थिति है। ना जाने भारत के अन्य युवा इस आजादी का क्या-क्या गलत लाभ उठाते जाएंगे। महिलाओं के जमीनी स्तर की समस्याएं आज भी सुलझ नहीं पाई है कानून होने के बावजूद भी आज भी महिलाएं कहां सुरक्षित है कहां है आजादी?

समस्त देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ व बधाई

NAAC B+

स्वामी शुकदेवानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय

मुमुक्षु आश्रम, शाहजहाँपुर–242226

सम्बद्ध–एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

अध्ययन केन्द्र–इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

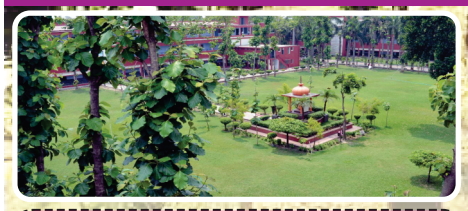

अनुदानित पाठ्यक्रम

बी.ए.
(अंग्रेजी हिन्दी, अर्थशास्त्र
राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, संस्कृत)

बी–एस.सी.
(भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित)

बी.काम., बी.एड.

एन.सी.सी., एन.एस.एस., रोवर्स–रेंजर्स

स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रम

बी.ए.
(गृहविज्ञान, ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग, संगीत (गायन), इतिहास, शिक्षाशास्त्र, भूगोल, सैन्य विज्ञान, मनोविज्ञान एवं दर्शनशास्त्र)
बी–एस.सी. (जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान)
बी.बी.ए., बी.सी.ए.
बी.काम. आनर्स
बी.काम. फाईनेन्स, बी.काम. कम्प्यूटर, बी.एड़.
एम.ए.
(हिन्दी,अंग्रेजी,अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, इतिहास एवं गृहविज्ञान)
एम–एस.सी.
(रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, गणित, वनस्पति विज्ञान एवं जन्तु विज्ञान)
एम.एड़., एम.काम.

डा. अवनीश कुमार मिश्रा
सचिव

स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती
अध्यक्ष, प्रबंध समिति

प्रो. डा. आर.के. आजाद
प्राचार्य

Website-www.sscollegespn.org., E-mail: sspgspncollege@gmail.com

समस्त देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ व बधाई

SHRI SHANKAR MUMUKSHU VIDYAPEETH

(An English Medium Co-Education Sr. Secondary School)

(Affiliated to C.B.S.E. New Delhi)

Mumukshu Ashram, Shahjahanpur

(Phone : 05842-240107, Website : ssmv.net.in Email : ssmv8967spn@rediffmail.com)

(Founder-Swami Chinmayanand Saraswati Ji Maharaj)

Special Features of School

- Teaching all subject by the LCD Projector.
- Air conditioned Computer Lab, Well Equipped Physics, Chemistry Biology, Biotechnology laboratories and Standard Library.
- Spacious Ground for Games and Sports.
- Fast growing school with Impressive three storied building.
- standard size well ventilated Class rooms, modern comfortable furniture & generator facility.
- High Qualified, Trained and efficient teachers and Principal having served more than 10yrs of experience in education & administration.
- Neat surroundings and serene environment.
- Once again Brilliant top results in Secondary & Senior Secondary Examination.
- Ideal teacher-pupil ratio which is rarely found elsewhere.
- Bus facility to City, Tilhar and Jalalabad.

- Students are competing in Joint Exams.
- For Skills Development Subjects Class IX-XII.
- Business Administration/Artificial Intelligence/Information Technology/Physical Activity Trainer/Yoga.
- Std.XI-XII Science & Commerce with Special Subjects e.g. Computer Science/Bio technology/Entrepreneurship

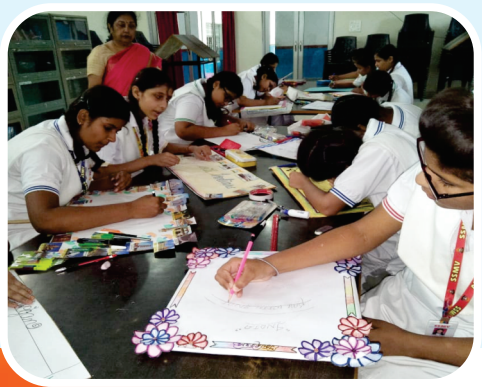

Swami Chinmayanand Saraswati
President/Founder

Dr. Meghna Mehandiratta
Principal

Ashok Agarwal
Secretary